UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 8 स्कूल मुझे अच्छा लगा (मंजरी)

महत्त्वपूर्ण गद्यांश की व्याख्या

“मुझे और कुछ ..... उसे कुछ सूझा।

सदर्भ:
प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक ‘मंजरी’ के स्कूल मुझे अच्छा लगा’ नामक पाठ से लिया गया है। इसकी लेखिका तेत्सुको कुरोयानागी हैं।

प्रसंग:
प्रस्तुत लेख में लेखिका ने वर्तमान स्कूलों की शिक्षा पद्धति पर करारी चोट करते हुए उसे बच्चों के लिए व्यावहारिक बनाने की बात कही है।

व्याख्या:
हेडमास्टर ने छोटी बच्ची तोत्तो-चान से कुछ भी बताने को कहा। खुश होकर लड़की कुछ-न-कुछ जल्दी-जल्दी बोलती गई। बहुत देर तक बोलकर रुक गई। हेडमास्टर ने उससे फिर पूछा कि वह रुक क्यों गई? लड़की ने दिमाग पर जोर डाला। उसे बोलने का अच्छा मौका था, परन्तु उसे बताने के लिए कुछ सूझ नहीं रहा था। लड़की ने ध्यान लगाकर विचार किया और उसे बोलने के लिए विषय मिल गया। जिस विषय पर उसने फिर बोलना शुरू कर दिया, यह विषय था उसका फ्रॉक जो उसने पहन रखा था।

पाठ का सार (सारांश)
तोत्तो-चान एक सात वर्ष की जापानी लड़की थी। उसने नए स्कूल का गेट देखा। यह पेड़ के दो तनों से बना था। स्कूल के कमरों की जगह छह बेकार रेलगाड़ी डिब्बे काम में लाए जाते थे। तोत्तो-चान को यह स्कूल अच्छा लगा। माँ उसका है हाथ पकड़कर हेडमास्टर के पास गई। तोत्तो-चान ने कहा कि हेडमास्टर जरूर स्टेशन मास्टर होंगे, क्योंकि रेलगाड़ी के डिब्बों के मालिक स्टेशन मास्टर होते हैं।

https://www.evidyarthi.in/

माँ ने कहा, “तुम्हारे पिता जी वायलिन बजाते हैं। उनके पास ढेरों वायलिन हैं परन्तु अपना घर वायलिन की दुकान नहीं है।”
हेडमास्टर जी ने माँ को घर भेजकर तोत्तो-चान से बात की। हेडमास्टर जी ने तोत्तो-चान से कुछ भी बताने के लिए कहा। तोत्तो-चान बोली कि जिस ट्रेन से वह आई, वह बहुत तेज थी। टिकट बाबू ने उससे टिकट माँगा। उसके दूसरे स्कूल की शिक्षिका बहुत सुन्दर है। उसका भूरा कुत्ता करिश्मे दिखाता है। वह मुँह से कैंची चलाती है। शिक्षिका ने इसके लिए मना किया है। ऐसा न हो कि जीभ कट जाए। लेकिन वह फिर भी वैसा ही करती है। उसने बताया कि वह नाक कैसे सिनकती है। उसकी बहती नाक को देखकर माँ डाँट लगाती है। उसके पापा अच्छे तैराक हैं। वे गोता भी लगा लेते हैं। हेडमास्टर कभी हँसते और कहते, “अच्छा फिर?” वह फिर बोलती गई। फिर रुक गई। हेडमास्टर ने पूछा, “कुछ और नहीं बता सकतीं?” उसने कॉलर उठाकर हेडमास्टर को दिखाया। उन्होंने प्यार भरा हाथ उसके सिर पर रखकर कहा, “अब तुम इस स्कूल की छात्रा हो।” तोत्तो-चान बहुत खुश थी। । तोत्तो-चान को यह स्कूल अलग तरह का और अच्छा लगा। उसे पता नहीं था कि दोपहर का भोजन भी इतने आनन्द की बात हो सकती थी। हरेक बच्चा खाने में कुछ समुद्र से और कुछ पहाड़ से लाता था। हेडमास्टर जी बच्चों की खाने की हर मेज पर रुककर डिब्बों में झाँकते थे।
अगले दिन तोत्तो-चान जल्दी उठकर तैयार हो गई और अपना बस्ता पीठ पर बाँधे इंतजार करने लगी। माँ लंच बॉक्स तैयार करने में जुट गई। उसमें कुछ समुद्र और कुछ पहाड़ से भी तो डालना था। तोत्तो-चान “गुडबाय” कहकर निकलने लगी। उसे जाता देख माँ की आँखें भर आईं। उसकी चुलबुली बिटिया जो हाल में ही एक स्कूल से निकाली गई थी, खुशी से स्कूल जा रही थी।

https://www.evidyarthi.in/